पुरातत्व शिल्प सौंदर्य और जैन कला का अद्भुत संगम देवगढ़

ललितपुर जिला मुख्यालय से 33 किलोमीटर की दूरी पर बेतवा के तट पर विन्ध्याचल की दक्षिण-पश्चिम पर्वत श्रृंखला पर देवगढ ऐतिहासिक स्थान है। इसका प्राचीन नाम लुअच्छागिरि है। 1974 तक यह नगर झांसी जिले में आता था। झांसी यहां से लगभग 123 किलोमीटर दूर है। इस जगह का उल्लेख गुप्त, गुर्जर, प्रतिहार, गोंड, मुस्लिम शासकों और अंग्रेजों के समय में भी मिलता है। 8वीं से 17वीं शताब्दी तक यह स्थान जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र था। पहले प्रतिहारों बाद में चंदेलों ने यहां शासन किया।

अतिशय क्षेत्र देवगढ़ के कर्णाली किले में स्थित 31 जैन मंदिरों में 8वीं से 17वीं शताब्दी की करीब दो हजार मूर्तियां

भगवान विष्णु को समर्पित गुप्त काल का दशावतार मंदिर

बेतवा नदी के किनारे बसा छोटा सा शहर देवगढ़ दशावतार मंदिर और जैन मंदिर के लिए प्रसिद्ध है। दशावतार मंदिर भगवान विष्णु और उनके दस आध्यात्मिक रूपों को समर्पित है। यह मंदिर गुप्त काल का है और उत्तर भारत में अपनी तरह का पहला मंदिर है। दशावतार मंदिर से हमने जैन मंदिर पहुंचने के लिए ऑटो से करीब 1.5 किलोमीटर की यात्रा की। दोनों तरफ जबरदस्त हरियाली वाला जंगल के बीच दूर से सुनाई पड़ती बेतवा नदी की आवाज, इस इलाके को बहुत ही शांत और रमणीय बनाती है। हलांकि यहां रहने और खाने-पीने की कोई खास सुविधा नहीं है।

31 जैन मंदिर, 19 मान स्तम्भ और दीवालों पर उत्कीर्ण 200 अभिलेख

- देवगढ़ में बेतवा नदी के किनारे 41 में से बचे 31 जैन मंदिर दर्शनीय हैं। यहां 19 मान स्तम्भ और दीवालों पर उत्कीर्ण 200 अभिलेख सहित कुल 500 अभिलेख प्राप्त हुए हैं। जैन मंदिरों के ध्वंसावशेष यहां बहुतायत में विद्यमान हैं। यहां प्रतिहार, कल्चुरि और चंदेलों के शासनकाल की प्रतिमाएं और अभिलेख बिखरे पड़े हैं। बिखरी हुई मूर्तियों को संग्रहालय में सुरक्षित रखा गया है। देवगढ़ पुरातत्वविदों का एक महत्वपूर्ण कला केंद्र है। इसे बेतवा नदी का आइसलैंड भी कहा जाता है।

दो भाइयों के बनवाए सात भोंयरे

- देवगढ़ के 31 जैन मंदिर लोगों को काफी आकर्षित करते हैं। कर्णाली किला एक पहाड़ी पर स्थित है, जहां से बेतवा नदी का सुंदर नजारा देखा जा सकता है। छठी से सत्रहवीं शताब्दी तक यह स्थान जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र था। मंदिर में जैन धर्म से संबंधित अनेक चित्र बने हुए हैं। बुंदेलखंड क्षेत्र' में सात भोंयरे (भूमिगत स्थान) बहुत प्रसिद्ध हैं, जो पावा, देवगढ़, सेरोंन, करगुवां, बंधा, पपौरा और थूवोन में स्थित हैं। कहा जाता है कि यह सात सात भोंयरे दो भाइयों अर्थात 'देवपत' और 'खेवपत' द्वारा निर्मित किए गए हैं।

गुफा मंदिर, राज और नहर घाटी के नीचे बेतवा नदी का मनोरम

लगभग 8 वीं से 17 वीं शताब्दी तक यह स्थल जैन मतावलंबियों (दिगंबर) का एक केन्द्र रहा है। यहां चट्टानों को काटकर बनाए गये गुफा मंदिर (सिद्ध की गुफा), राजघाटी, नहरघाटी आदि भी हैं। बेतवा नदी पहाड़ियों के नीचे बहती है और नीचे जाने के लिए पत्थरों को काट कर सीढ़ियां बनाई गयी हैं। सीढ़ियों से नीचे उतरते समय बाईं तरफ चट्टानों को तराश कर छोटे छोटे कमरे बना दिए गये हैं, जिनमें जैन मुनि एकांत में प्रकृति का आनंद लेते हुए अपनी साधना में निमग्न रहते थे। चट्टानों पर लगभग 8 वीं शताब्दी की ब्राह्मी लिपि में कई जगह लेख भी खुदे हैं।

40 जैन मंदिरों में छोटे-बड़े मिलाकर अब 31 ही बचे

पहाड़ी के ऊपर की समतल भूमि पर अनेकों मंदिर बने हुए हैं। बहुत सारे तो ध्वस्त हो गये हैं। एक तरफ कुछ भग्नावशेष दिखे, जिसे वराह का मंदिर बताया गया, लेकिन इसका केवल अब चबूतरा बचा हुआ है। यहां कहा जाता है कि कुल 40 जैन मंदिर और थे। जिनमें छोटे बड़े मिलाकर 31 बचे हैं।

संग्रहालय में प्राचीन कलाओं का इतिहास

- देवगढ़ के आसपास एकत्र की गई मूर्तियों को पास बने संग्रहालय में संरक्षित किया गया है। देवगढ़ और आसपास की खुदाई से प्राप्त की गई मूर्तियों को यहां देखा जा सकता है, जो प्राचीन शिल्प की झलक दिखाती हैं।

सहस्त्रकूट खंभे पर एक हजार जैन मुनियों की उकेरी आकृति

- शांतिनाथ जी का मंदिर यहां सबसे उल्लेखनीय है। यहां मनौती के रूप में खंभों का निर्माण कराने की परंपरा रही है, जिन्हें मानस्तम्भ कहा जाता है। ऐसे ही मनौती में शिलाखंड दिए जाने की भी प्रथा थी। चारों तरफ से दिखने वाली "सर्वतोभद्र" प्रतिमा तथा 1000 जैन मुनियों की आकृति उकेरी हुई "सहस्त्रकूट" खंभे विशिष्ट हैं।

लेखक – रोहित टंडन
उद्यमी कानपुर

चल सको तो चलो, गांव बुलाते हैं

पिछले दिनों मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के खेत में पटेला लगाने की तस्वीरें वायरल हुई थीं। इसके साथ ही, गढ़वाल के एक कर्नल की खेती-बाड़ी की चर्चा भी खूब हो रही है। कुछ इन्हीं की तरह हैं, उत्तराखंड के कुमाऊं अंचल के सेवानिवृत आईएएस अधिकारी रमेशचंद्र पाठक, वह पिछले 12 वर्षों से चुपचाप पैतृक गांव मल्ला डौणू, तहसील बेरीनाग, जिला पिथौरागढ़ की मिट्टी से रिश्ता निभा रहे हैं।

आईएएस अधिकारी के रूप में बड़े पदों पर रहने के बाद अन्य अधिकारियों के तरह महानगरों के बजाय गांव लौटने और खेती करने के पीछे की वजह?

- एक सामान्य किसान परिवार में मेरा जन्म हुआ। पिता ईश्वरी दत्त पाठक और मां खष्टी देवी खेती ही करते थे। मैं हमेशा जमीन से जुड़ा रहा। सेवाकाल में भी बराबर गांव आता-जाता रहा इसलिए अपनी मिट्टी से प्रेम बना रहा।

अपनी शिक्षा के बारे में बताएं

- बचपन में छानी यानी झोपड़ी में पढ़ाई की। 13 वर्ष में हाईस्कूल की परीक्षा पास कर ली थी। इंटर तक की पढ़ाई स्कॉलरशिप और 'पुअर ब्वॉयज फंड' से हुई। आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, इसलिए आगे की पढ़ाई के लिए पिता ने जमीन गिरवी रख दी। दो विषयों से एमए करने के साथ एलएलबी किया।

पिथौरागढ़ के दुर्गम गांव में रहने के बावजूद आईएएस बनने का विचार कैसे आया

- 1974 में बागेश्वर में बैंक से वेतन निकालते समय एक अखबार में यूपीपीसीएस का विज्ञापन देखा। बिना ज्यादा जानकारी के फॉर्म भर दिया। लेकिन तब यह भी पता नहीं था कि डिप्टी कलेक्टर क्या होता है। बिना किसी तैयारी के पहले प्रयास में ही प्री और रिटर्न निकाल लिया। लेकिन परीक्षा में पूर्ण रूप से सफलता नहीं मिली। इसके बाद परीक्षा को गंभीरता से लिया। पढ़ाने के साथ खुद पढ़ना शुरू किया। 1977 में डिप्टी कलेक्टर पद पर चयन हो गया।

आप किन-किन महत्वपूर्ण पदों पर रहे

- उत्तराखंड बनने के बाद राज्य के पहले लेबर कमिश्नर के रूप में काम करने के साथ ही, गन्ना आयुक्त, डीएम चंपावत, समाज कल्याण निदेशक, सचिव, परिवहन आयुक्त जैसे पदों पर कार्य किया।

अभी किस उपज की खेती की है।

- अभी खेतों में धान, उड़द, भट्ट की बुआई की है। गुड़ाई भी खुद ही करते हैं। खेती में लागत अधिक है, फिर भी इसे अपनाया है।

प्रशासनिक अनुभव गांव में कुछ काम आया।

- सेवानिवृत्ति के बाद अपनी प्रशासनिक क्षमता व अनुभव के जरिए गांव में सड़क, बिजली, पानी और स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाओं के लिए प्रयास किए। आज गांव में शहर जैसी कई सुविधाएं उपलब्ध हैं।

पहाड़ के गांवों से पलायन क्यों हो रहा है।

- पलायन रोकने का सबसे सशक्त उपाय है, महिलाओं और बेटियों को खेती-बाड़ी से जोड़ना और गांव के प्रति गर्व की भावना पैदा करना। अगर एक पूर्व आईएएस अधिकारी गांव में रहकर अपने खेत में काम कर सकता है, तो बाकी क्यों नहीं? पलायन तब तक नहीं रुकेगा, जब तक हम युवाओं और महिलाओं को गांव से जोड़ने के ठोस प्रयास नहीं करेंगे। मेरे जैसे न जाने कितने लोगों ने गांव में पढ़ाई कर उच्च पद हासिल किए और आज भी कर रहे हैं। इसलिए बच्चों की पढ़ाई के नाम पर पलायन सिर्फ आरामतलब जिंदगी जीने का एक बहाना है।

आज के युवाओं के लिए क्या संदेश देना चाहेंगे।

- यही कि समय सबसे बड़ा धन है, इसे गंवाए नहीं। मेहनत, सादगी और आत्मसंस्कार ही जीवन को सार्थक बनाते हैं। अपना आहार, विहार, विचार व संस्कार अच्छा रखें जीवन आनंदमय रहेगा।

लेखक – हरीश उप्रेती
करन, हल्द्वानी

युवाओं के सामने लक्ष्यहीनता बड़ी चुनौती हार न मानें, क्षमताएं पहचान कर आगे बढ़ें

आज तमाम विषय युवा पीढ़ी के सामने बड़ी चुनौती बनकर खड़े हैं। इसमें लक्ष्यहीनता गंभीर चुनौती है। युवाओं को समझना होगा कि शिक्षा केवल नौकरी पाने का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व विकास और क्षमताओं को निखारने का जरिया है। इसके लिए बचपन से ही अपने रुचियों और क्षमताओं को पहचानने का प्रयास करना चाहिए।

स्कूल-कॉलेज करें करियर काउंसलिंग, विश्वविद्यालयों में रोजगारपरक कोर्स

- स्कूलों और कॉलेजों में करियर काउंसलिंग को और अधिक प्रभावी बनाया जाना चाहिए, जहां छात्रों को करियर विकल्पों और उनके लिए आवश्यक कौशल के बारे में जानकारी मिले। विश्वविद्यालयों और कॉलेजों को इस तरह के कोर्स शुरू करने चाहिए, जो रोजगार से जुड़े हों। शिक्षण संस्थानों को स्टार्टअप इकोसिस्टम को बढ़ावा देना चाहिए, जहां युवा अपने व्यावसायिक विचारों को हकीकत में बदल सकें।
- **कमियां पहचानें अध्ययन समूह बनाएं मॉक टेस्ट से करें प्रगति का मूल्यांकन:** यूपीएससी मुख्य परीक्षा में उत्तर लेखन बहुत महत्वपूर्ण है। रोज उत्तर लिखने का अभ्यास करें और अपनी कमियां पहचानें। समान विचारधारा वाले दोस्तों के साथ अध्ययन समूह बनाएं। नियमित मॉक टेस्ट देकर अपनी प्रगति का मूल्यांकन करें और कमजोरियों पर काम करें।

बेरोजगारी, जरायम और नशे की रोकथाम

- उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी नौकरी न मिलना युवाओं में हताशा और अवसाद का कारण बनता है, जिससे कुछ युवा जरायम की दुनिया या नशे के जाल में फंस जाते हैं। यह गंभीर सामाजिक समस्या है, ऐसे युवाओं को मानसिक स्वास्थ्य परामर्श और सहायता प्रदान की जानी चाहिए। पुलिस और नागरिक संगठनों को मिलकर नशे के दुष्परिणामों के बारे में जागरूकता अभियान चलाने चाहिए। समुदायों और परिवारों को भी युवाओं पर नजर रखने और उन्हें सही रास्ते पर लाने में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। नशे के शिकार युवाओं के लिए पुनर्वास और परामर्श केंद्र स्थापित किए जाने चाहिए। इस संबंध में पुलिस द्वारा मेधावी विद्यार्थियों को मोटिवेशन क्लास देना सराहनीय पहल हो सकता है। मैं इस दिशा में अपनी भूमिका निभाने के लिए प्रतिबद्ध हूं।

बिना कोचिंग भी क्रैक कर सकते यूपीएससी परीक्षा

- यूपीएससी परीक्षा को सबसे कठिन माना जाता है। आम धारणा है कि इसे बिना महंगी कोचिंग के क्रैक करना संभव नहीं है। लेकिन यह सच नहीं है। दृढ़ संकल्प, सही रणनीति और अनुशासित स्व-अध्ययन के साथ बिना कोचिंग के भी इस परीक्षा को पास किया जा सकता है। इसके लिए यूपीएससी के विस्तृत पाठ्यक्रम को समझें। हर विषय के लिए सही अध्ययन सामग्री चयनित करें। इंटरनेट पर मुफ्त और गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री, वीडियो व्याख्यान, मॉक टेस्ट और पिछले वर्षों के प्रश्नपत्रों का बुद्धिमानी से उपयोग करें। दैनिक समय सारिणी बनाकर सख्ती से पालन करें। प्रत्येक विषय को पर्याप्त समय दें।

असफलता अंत नहीं है, दिखाती उज्ज्वल भविष्य के लिए रास्ता

- यूपीएससी परीक्षा में यदि कोई युवा इसमें सफल नहीं हो पाता है, तो भी सफलता के कई रास्ते हैं। हर एक को अपनी क्षमता के अनुसार उन्हें खोजना चाहिए। राज्य स्तरीय सिविल सेवा परीक्षा (पीसीएस), बैंकिंग, रेलवे, एसएससी और विभिन्न सरकारी विभागों में तमाम अवसर उपलब्ध हैं।

पुलिस सिर्फ कानून-व्यवस्था के लिए नहीं, सामाजिक सुधार भी दायित्व

- एक पुलिस अधिकारी होने के नाते, मेरा मानना है कि पुलिस केवल कानून और व्यवस्था बनाए रखने तक सीमित नहीं है, बल्कि उसे सामाजिक सुधार और सामुदायिक विकास में भी सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए, तभी हम एक साथ मिलकर, युवाओं के लिए सुरक्षित, सशक्त और उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। यह सिर्फ पुलिस की नहीं, बल्कि पूरे समाज, शिक्षाविदों, परिवारों और सबसे बढ़कर, स्वयं युवाओं की सामूहिक जिम्मेदारी है। हमें उन्हें यह विश्वास दिलाना होगा कि उनकी क्षमताएं असीमित हैं और वे अपने सपनों को साकार कर सकते हैं।

लेखक – मणिकांत मिश्रा, आईपीएस
एसएसपी, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखंड

लोग कहते हैं, लावारिस शवों का वारिस

किसी लावारिस शव का सम्मान के साथ अंतिम संस्कार करने से बड़ा पुनीत कार्य और क्या होगा। यही सोच थी, जिसे अपने साथियों के साथ मिलकर आगे बढ़ाया। इस काम से मन को बड़ी शांति और संतुष्टि मिलती है। बीते 15 माह में 208 से ज्यादा लावारिस शवों का सम्मानजनक तरीके से अंतिम संस्कार कराया है। हल्द्वानी शहर के तिकोनिया में मेरा निवास है। कोविड-19 महामारी के दौरान जब अधिकांश लोग अनजाने खौफ के कारण घरों में कैद थे, तब मैं टीम के साथ सड़कों पर मौजूद था। दर्जनों लावारिस शवों का अंतिम संस्कार और सैनिटाइजेशन का कार्य कराया। मेरा यह काम न किसी गैर सरकारी या स्वयंसेवी संगठन (एनजीओ) के अंतर्गत आता है, न ही मैं किसी तरह का कोई सरकारी अनुदान या मदद लेता हूं। बेशक इस काम में समाज के विभिन्न वर्गों का आर्थिक सहयोग मिलता है। पहले हल्द्वानी के टनकपुर रोड स्थित मुक्तिधाम में लकड़ी की चिता सजाकर अंतिम संस्कार करते थे, लेकिन अब विद्युत शवदाह गृह में भी लावारिस शवों को सम्मानजनक विदाई दी जाती है।

मैं अकेला ही चला था...

- मैं अकेला ही चला था जानिब-ए-मंजिल मगर लोग साथ आते गए और कारवां बनता गया... मेरी शुरू से ही लोगों की निस्वार्थ मदद करने की सोच रही है। कोई मुझे लावारिस शवों का वारिस कहता है तो कोई और कुछ। बस यही बातें मेरा उत्साह बढ़ाती हैं। अब काफी लोग मुझसे जुड़ने लगे हैं। नगर आयुक्त ऋचा सिंह, नवीन मंडी सचिव दिग्विजय सिंह देव, वन विभाग के रेंजर मुकुल शर्मा, संतोष बल्यूटिया, अमित रस्तोगी, हरीश चन्द्र जोशी, वंश गौनियां, विजय पालीवाल, दिलीप कपूर, संजय जायसवाल, राजपाल लैधा, मयंक शर्मा, इंजीनियर दिनेश सिंह, बीडी छिमवाल, अशोक कटारिया, राम रतन पांगती सहयोग करते हैं।

लेखक – हेमंत गौनिया, तिकोनिया
हल्द्वानी

फुदकने और उड़ने के लिए तैयार हैं हम...

इस तस्वीर में अशरीरी या टेलरबर्ड से मिलती-जुलती प्रजाति अशरीरी प्रिनिया के बच्चे घोंसले से बाहर आने की कोशिश कर रहे है। अशरीरी प्रिनिया कीटभक्षी चिड़िया है। इसकी बाई लगभग 14 सेमी होती है। ऊपरी हिस्सा स्लेटी ग्रे और पंख भूरे रंग के होते हैं। पेट और गला हल्के पीला सफेद रंग का होता है। इसका घोंसला गोलाकार होता है। यह चित्र पाठक रवि गौतम, कानपुर ने भेजा है।